# नारे जहन्नम

लेखक- मौलाना वहीद उद्दीन खान

अनुवाद -

डा0 रफ़ीक़ अहमद

# जहन्नम की आग

**लेखक– मौलाना वहीद उद्दीन खान**

अनुवाद –

डा० रफ़ीक़ अहमद

| | | |
|---|---|---|
| किताब का नाम | : | नारे जहन्नम |
| लेखक | : | मौलाना वहीदउद्दीन ख़ान |
| अनुवाद | : | डा० रफ़ीक़ अहमद<br>M.: 9451767474 |
| हिन्दी एडीशन | : | 2020 |
| प्रतियाँ | : | 1000 |
| पृष्ठ | : | 48 |
| कम्पोज़िंग | : | शाहनवाज़ |
| प्रिन्टर्स | : | रहमान प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स<br>आबूनगर–फ़तेहपुर |
| सहयोग राशि | : | **10/-** |

प्रकाशक

# अल्फाबेट पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स

**इलाहाबाद**

●

मिलने का पता :

***असद बुक डिपो***

11-C, **याकूतगंज, नखासकोना-इलाहाबाद**

Mob. : 9307408918

# ज़िंदगी की हक़ीक़त

इस क़ायनात का एक ख़ुदा है। उसी ने सारी चीज़ों को बनाया है। वह मौत के बाद सारे इंसानों को जमा करके उनसे हिसाब लेगा और फिर हर एक को उसके कर्म के अनुसार या तो हमेशा की जन्नत में प्रवेश मिलेगा या हमेशा के जहन्नम में। यह अन्जाम हर एक के सामने आने वाला है चाहे वो कमज़ोर हो या ताक़तवर।

यह संगीन हक़ीक़तें किसी के दिल में उतर जाए तो उसकी ज़िंदगी कुछ से कुछ हो जाती है। वह उन समस्त वस्तुओं के बारे में अत्यन्त संवेदनशील हो जाता है। जो आदमी को जहन्नम की आग में पहुंचाने वाली है। और उन समस्त वस्तुओं का बेहद इच्छुक हो जाता है। जो आदमी को जन्नत के बग़ीचों को पात्र बनाने वाली हैं। वह हर चीज़ से ज़्यादा अल्लाह से डरने लगता है और हर चीज़ से ज़्यादा अल्लाह से मोहब्बत करने लगता है।

ख़ुदा और आख़िरत के बारे में उसकी बढ़ी हुई संवेदनशीलता उसको बंदों के बारे में भी अत्यन्त सावधान और ज़िम्मेदार बना देती है। एक इंसान से बुराई करते हुए उस को ऐसा महसूस होता है मानो कि वह अपने आप को जहन्नम की खाई में गिरा रहा है। बंदों के साथ उदन्डता का व्यवहार करते हुए वो इस प्रकार डरने लगता है जैसे कि हर आदमी अपने साथ जहन्नम के फ़रिश्तों की फ़ौज लिए हुए है। अपने साहबे मामला व्यक्तियों से अन्याय करना उसको ऐसा मालूम होता है जैसे कि उसने अपने आप को आग के गड्ढे में ढकेल दिया है। अब कोई इन्सान उसकी नज़र में मात्र एक इन्सान नहीं होता। बल्कि वो एक ऐसा वजूद होता है जिस के पीछे ख़ुद ख़ुदा अपनी सारी शक्तियों के साथ खड़ा हुआ हो।

# ईमानी इन्क़िलाब

खुदा सब से बडी ताक़त है। उसकी पकड़ बहुत बड़ी है और उसकी सज़ा भी बहुत बड़ी है। ऐसे खुदा पर ईमान लाना कोई सरल घटना नहीं है। खुदा पर ईमान जब किसी की ज़िन्दगी में प्रवेश करता है तो उसके पूरे अस्तित्व को हिला देता है।

आदमी शेर को खुला हुआ देखता हे तो उस का अस्तित्व हिल जाता है। उससे कहीं ज्यादा हलचल व्यक्ति के अन्दर उस वक्त पैदा होती है जबकि वह खुदा को पा ले। खुदा पर ईमान लाना खुदा को पाने का इक़रार करना है।

जब कोई व्यक्ति वास्तविक अर्थो में खुदा को पाता है तो खुदा उस के लिए वह हकीक़त बन जाता है जिस पर वह सब से ज़्यादा यक़ीन करे। खुदा उस के लिए वह ताकत बन जाता है। जिससे वह सब से ज़्यादा डरे।

ईमान वह है जो आदमी की ज़िन्दगी में भूचाल बन कर दाख़िल हो। कियामत के भूचाल से पहले आदमी के लिए भूचाल बन जाए। इस प्रकार का ईमान जब किसी को मिलता है तो उस के पूरे वजूद पर खुदा का डर छा जाता हैं उसके लिए हर मामला खुदा का मामला बन जाता है। किसी छोटे को बेइज़्ज़त करने से वह इस तरह कांपता है मानोकि वह कायनात के मालिक के सफीर को बेइज़्ज़त कर रहा है। किसी बड़े की खुशामद करते हुए उस को ऐसा महसूस होता है मानो कि वह खुदा की ग़ैरत को चैलेन्ज कर रहा है। हक स्पष्ट होने के बाद उस को नज़र अंदाज करना उसके नज़दीक ऐसा बन जाता है जैसे कोई व्यक्ति जन्नत और जहन्नम को अपनी खुली आंखों से देखे, फिर भी जन्नत के बाग़ीचों को छोडकर जहन्नम की आग में कूद पडें।

# आज़माइश

आदमी का मामला जब किसी से पड़ता है तो उस को वह मात्र एक व्यक्ति का मामला समझता है। यही वजह है कि वह फौरन उदन्डता और अन्याय पर उतर आता है। अगर वह जाने कि हर मामला ख़ुदा का मामला है तो वह कभी सरकश न बने। वह कभी अन्याय का रवइया न अपनाये।

दुनिया में जो कुछ हो रहा है वह सब ख़ुदा की इजाज़त और उसकी योजना के अन्तर्गत हो रहा है। उस के पीछे ख़ुदा की हिकमत इम्तेहान काम कर रही है। हर घटना जो घटित होती है वह इसलिए घटित होती है कि उसके ज़रिये से सम्बन्धित व्यक्ति को आज़माया जाए। परिस्थितियों में डाल कर हर एक को देखा जाए कि कौन क्या था और कौन क्या नहीं था।

किसी घटना के दौरान यह देखना आपेक्षित होता है कि व्यक्ति अपने पड़ोसी और अपने साहबे मामला को सताता है या न्याय के अनुसार उसका हक़ अदा करता है। कोई घटना इस लिए घटित होती है कि यह देखा जाए के लोग अपने को जिस तराज़ू से तोलते हैं उसी से दूसरे को भी तोल रहे हैं या अपने और दूसरे के लिए उन्होंने अलग-अलग बांट बना रखे हैं। किसी घटना का मक़सद यह जाँचना होता है कि कौन व्यक्ति स्वार्थ और मसलेहत को महत्व देता है और वह कौन है जो स्वार्थ और मसलेहत को नज़रअन्दाज़ कर के सच्चाई की ओर दौड़ पड़ता है। यही वह मौक़े हैं जो व्यक्ति के अबदी भविष्य का फ़ैसला करते हैं। उन मौक़े पर दुरुस्त रवैया अपना कर अपने को जहन्नम में गिरा लेता है।

## जानने की बात

मौजूदा दुनिया में आदमी अपने को आज़ाद समझ रहा है। वह निडर हो कर जो चाहे बोलता है और जो चाहे करता है। अगर किसी को कुछ माल हाथ आ गया है तो वह समझता है कि मेरा भविष्य सुरक्षित है। किसी को कोई हुक़ूमत मिली है तो वह अपनी हुक़ूमत को इस प्रकार इस्तेमाल करता है जैसे उसकी हुक़ूमत कभी छिनने वाली नहीं। हर व्यक्ति मुत्मईन चेहरा लिए हुए है। हर व्यक्ति हँसते हुए अपनी मंज़िल की ओर बढ़ रहा है। यहाँ तक कि अचानक मौत का बिगुल बज जाता है। ख़ुदा के फ़रिश्ते आते हैं और उसको मौजूदा दुनिया से निकालकर एक मजबूर व्यक्ति की तरह अगली दुनिया में पहुँचा देते हैं।

यही हर आदमी का मामला है। जब यह भयानक क्षण आता है तो आदमी अपने अन्दाज़ा के बिलकुल विरुद्ध स्थित को देख कर भयभीत हो जाता है। अचानक उस को महसूस होता है कि वह सब कुछ मात्र धोखा था जिस को उसने अपनी ग़फ़लत से सब से बड़ी हक़ीक़त समझ लिया था। वह पुकार कर उठता है कि मैं ने अपने को आज़ाद समझा था मगर मैं तो बिल्कुल मजबूर निकला। मैं अपने को माल व ज़ायदाद वाला समझ रहा था मगर मैं तो बिल्कुल खाली हाथ था। मेरा ख़्याल था कि मेरे पास ताक़त है, मगर मैं तो ख़ुदा की इस दुनिया में मक्खी और मच्छर से भी ज़्यादा बेज़ोर था मगर यहाँ तो कोई एक भी मेरा साथी और मददगार नहीं। आज वह इन्सान जो इसी बात को नहीं जानता जिस को उसे सब से ज़्यादा जानना चाहिए।

# उस दिन

आज की दुनिया में आदमी खाता पीता है घर बनाता है। उहदे और तरक़्क़ियाँ हासिल करता है। वह जिस बात को चाहता है उसे मानता है और जिस बात को चाहता है उसे रद्द कर देता है। वह आज़ाद है कि जो चाहे वह बोले, वह आज़ाद है कि जो चाहे करे और जिस रुख पर चाहे अपनी ज़िंदगी का सफ़र शुरू कर दे।

यह मौजूदा स्थिति आदमी को धोखे में डाले हुए है। वह अपनी मौजूदा हैसियत को स्थायी हैसियत समझ बैठा है। हालाँकि उसकी अस्ल हैसियत यह है कि वह परीक्षा-काल में है और यहाँ जो कुछ उसे मिला हुआ है वह सिर्फ वक़्ती तौर पर मिला हुआ है। बहुत जल्द वह दिन आने वाला है जब यह सारी हैसियतें और सामान उससे छिन जाएगा। यहाँ तक कि लिबास भी उतार लिया जाएगा। जो आदमी के असासा की अन्तिम वस्तु होती है। वो अचानक अपने आप को इस हाल में पाएगा कि वो एक कमज़ोर अपराधी की तरह सृष्टि के स्वामी के सामने खड़ा हुआ है।

उस दिन सारी ऊँच-नीच मिट जाएगी- खौफ़ व दहशत से लोगों की ज़बान बंद हो चुकी होगी। आदमी के अपने वजूद के सिवा हर चीज़ उस का साथ छोड़ देगी। किसी के लिए ये मौक़ा न होगा कि अन्याय करके भी सफल हो सके और हक को नज़र अंदाज़ करके भी हक़ का ठेकेदार बना रहे।

इस आने वाले दिन को जो व्यक्ति आज देख ले वही सफल है। जो व्यक्ति उसे कल देखेगा उसके लिए उसके सिवा कोई अंजाम नहीं कि वो हमेशा के लिए अपमानित होकर आग की सजा भुगतता रहे।

# सिर्फ़ ( क्रेडिट )

इस दुनिया में किसी व्यक्ति को कोई व्यक्तिगत शक्ति प्राप्त नहीं। कोई व्यक्ति न किसी को कुछ देता ना कोई व्यक्ति किसी से कुछ छीनता। हर घटना जो इस ज़मीन पर होती है वह ख़ुदा की इजाज़त से होती है।

इंसान की सारी वास्तविकता यह है कि वह इस दुनिया में इम्तेहान के लिए है। और यह इम्तेहान एतेबार भी मात्र इरादों की हद तक है। इरादा के सिवा इंसान के बस में और कुछ नहीं।

देखने में सब कुछ असबाब (कारण समूह) से हो रहा है। मगर असबाब की हैसियत ज़ाहिरी परदा से ज़्यादा नहीं। इस दुनिया में किसी घटना को घटित होने के लिए असबाब व इलल (Cause and Effect) की इतनी ज़्यादा कड़ियां दरकार हैं जिनको पाना किसी इन्सान के बस में नहीं। यह हक़ीक़तन ख़ुदा है जो अपने फ़रिश्तों के ज़रिए यह तमाम कड़ियाँ उपलब्ध करता है।

जो घटनायें होती हैं वह इस लिए आदमी के सामने लायी जाती हैं कि उस की जाँच हो, ताकि उस का ख़ुदा यह देखे कि उस का बन्दा विभिन्न रवैइयों में से किस रवैइया का अपने लिए चुनाव करता है, कभी ऐसा होता है कि एक स्थिति में डाल कर देखा जाता है कि आदमी ने अपनी ज़बान हक़ के लिए खोली या नाहक़ के लिए। कभी एक घटना के दरमियान यह देखना मक़सूद होता है कि आदमी इन्साफ़ का रवैइया इख़्तियार करता है या बेइन्साफ़ी का। कभी एक घटना के ज़रिए यह देखा जाता है कि आदमी अपने वचन पर क़ायम रहता है या अपने वचन से फिर जाता है।

हक़ीक़त यह है कि घटनाओं का घटित होना ख़ुदा की तरफ़ से होता है। इन्सान तो सिर्फ अच्छा या बुरा क्रेडिट ले रहा है।

# कल को जानो

यह दुनिया इम्तेहान की जगह है। इस दुनिया में हर व्यक्ति को किसी न किसी दाएरे में अधिकार और इख़्तियार दिया जाता है। किसी के अधिकार का दायरा बड़ा है और किसी के अधिकार का छोटा। मगर अजीब बात है कि हर व्यक्ति अपने अधिकार परिधि में वही कुछ बन जाता है जो दूसरा व्यक्ति अपने अधिकार परिधि में बना हुआ है। ज़ाहिरी ऐतबार से लोगों में चाहे कितना ही अन्तर हो, हक़ीक़त के ऐतबार से उनमें कोई अन्तर नहीं।

हर व्यक्ति का यह हाल है कि वह दूसरे की काट में लगा हुआ है। हर व्यक्ति दूसरे को रद्द कर अपना वजूद ज़ाहिर करना चाहता है। हर व्यक्ति अपनी हैसियत का ग़लत अन्दाज़ा करके यह समझता है कि अगर उसने दूसरे को उसकी जगह से हटा दिया तो उसकी ख़ाली जगह उसे मिल जाएगी। वह भूल जाता है कि जो चीज़ उस का इन्तेज़ार कर रही है वह किसी की ख़ाली जगह नहीं बल्कि ख़ुद उसकी अपनी कब्र है। दूसरे व्यक्ति को कब्र में पहुँचाने वाला ख़ुद अपनी क़ब्र में पहुँचा दिया जाता है। दूसरे की बर्बादी का ख़्वाब देखने वाला अन्ततः अपने आप को ख़ुद अपनी बर्बादी के किनारे खड़ा हुआ पाता है।

हर व्यक्ति जो आज अपने को कामयाब समझता है वह कल अपने को नाकाम देखने पर मजबूर होता है। यह घटना प्रतिदिन घटित हो रही है। मगर कोई व्यक्ति आज के बाद आने वाले कल को नहीं देखता। हर व्यक्ति अपने आज को जानने का माहिर है, किसी को अपने आने वाले कल की खबर नहीं। अपने आज को जानने वालों, अपने कल को जानो। क्योंकि अन्ततः तुम जिस चीज़ से दो चार होने वाले हो वह तुम्हारा कल है न कि तुम्हारा आज।

# वक़्त से पहले

यह दुनिया इम्तेहान की जगह है। यहाँ हर व्यक्ति अपना-अपना इम्तेहान दे रहा है, वह चाहे तो अच्छे अमल करके परीक्षा में सफल हो सकता है। और अगर वह बेपरवाह रहे तो असफलता के परिणाम से दो चार होने के लिए कुछ करने की ज़रूरत नहीं। असफलता का परिणाम अपने आप हर व्यक्ति की तरफ दौड़ा चला आ रहा है। चाहे वह इस को कितना ही ज़्यादा नापसन्द करता है।

इस मामले में आदमी की मिसाल बर्फ बेचने वाले दुकानदार की सी है। बर्फ़ हर पल पिघलता रहता है। इसलिए बर्फ के दुकानदार की सफलता उसमें है कि वह बर्फ के पिघलने से पहले अपनी बर्फ़ को क़ीमत में तबदील कर ले। अगर उसने देर की तो आख़िरकार उस के पास कुछ न होगा जिससे वह अपना कारोबार कर सके। वह अपना मूलधन भी खो चुका होगा ओर उसी के साथ अपना नफ़ा भी।

यही मामला मानव जीवन का भी है। इन्सान उम्र गुज़ारने के साथ तेज़ी से एक भयानक अन्जाम की तरफ चला जा रहा है। उस अन्जाम का आना यक़ीनी है। इस से बचने की सूरत सिर्फ एक है। और वह यह कि उस वक़्त के आने से पहले अपनी ज़िन्दगी का सही इस्तेमाल तलाश कर लिया जाए। बर्फ़ का कामयाब व्यापारी वह है जो बर्फ़ के पिघलने से पहले अपनी बर्फ़ को बेच डाले। इसी तरह कामयाब इन्सान वह है जो अपनी उम्र के ख़त्म होने से पहले अपनी उम्र को सही कामों में इस्तेमाल कर ले। जो आख़िरत का मरहला सामने आने से पहले आख़िरत के लिए तैयारी कर चुका है।

## आदमी अगर जाने

मौजूदा दुनिया इम्तेहान की दुनिया है। इस दुनिया में जिस तरह हिदायत और मार्गदर्शन के मौक़े रखे गए हैं इसी तरह गुमराही के रास्ते भी खुले हुए हैं। हर व्यक्ति आज़ाद है कि वह जिस रुख़ पर चाहे चले। वह मौक़ा को जिस तरह चाहे इस्तेमाल करे। अपनी क़ूव्वतों को जिस काम में चाहे लगाए। मगर यह सब कुछ महज़ वक़्ती है न कि स्थायी।

यहाँ जो व्यक्ति हक़ की आवाज़ को रद्द करना चाहे उसको आसानी से ऐसे खूबसूरत अल्फ़ाज़ मिल जाते हैं जिनको बोल कर वह अपने आप को झूठे यक़ीन में मुबतला कर ले। यहाँ दीन की सच्ची दावत को नज़रअंदाज़ करके भी व्यक्ति ऐसे दर व दीवार पा लेता है जिनके साए में वह पनाह ले सके। यहाँ ख़ुदा की पुकार की तरफ़ से अपने कानों को बन्द करके भी ऐसी चट्टानें मिल जाती है जो किसी को यह तस्कीन दे सकें कि उसने अपने लिए एक मज़बूत सहारा खोज लिया। मगर जब परदा हटेगा तो ये चीज़ें इतनी अर्थहीन साबित होंगी जैसे उनका कोई वजूद ही न था। जब क़ियामत की चिंघाड़ बुलन्द होगी और कायनात का मालिक अपने जलाल (तेज) के साथ ज़ाहिर होगा तो आदमी इतना बेबस होगा कि उसके लिए उसके सिवा कोई चारा न होगा कि उन तमाम बातों को मान ले जिनको मानने के लिए वह पहले तैयार न होता था। हक़ीक़त यह है कि आदमी अगर आने वाले दिन की हौलनाकी को जाने तो उसकी चलती हुई ज़बान बन्द हो जाए जिसके शब्दों का भण्डार आज किसी तरह ख़त्म होने वाला नज़र नहीं आता। उस के उठे हुए हाँथ रुक जाएं जिसको नैतिकता और मानवता की हर नसीहत रोकने में नाकाम साबित हो रही है।

## आह ! यह इन्सान

आज हर आदमी बेहोश नज़र आता है। हर आदमी अपने आप में इस तरह खोया हुआ है जैसे उसके ऊपर कोई और ताक़त नही। हालांकि मौत हर रोज़ बता रही है कि आदमी एक ऐसी हक़ीक़त से दो चार है, जिसके मुक़ाबले में किसी का कुछ बस नहीं चलता। इंसान कितना ज़्यादा मजबूर है मगर वह अपने आप को कितना ज़्यादा शक्तिशाली समझता है।

आदमी वादा करता है मगर उसके बाद उसको नज़र अंदाज कर देता है। उसके ऊपर किसी का एक हक़ आता है मगर वह उसको अदा नहीं करता। आदमी के सामने एक सच्चाई आती है मगर वह उसको स्वीकार नहीं करता। वह दूसरे के ऊपर एक तरफ आरोप लगाता है और अपनी ग़लती मानने के लिए तैयार नहीं होता। वह छोटों को नज़रअंदाज़ करके बड़ों का स्वागत करता है। वह अपनी ज़िंदगी को उसूल और सिद्धान्त के अधीन करने के बजाए इच्छाओं के अधीन करता है वह ताक़तवर से दबता है और कमज़ोर को सताता है। वह ख़ुदा को तवज्जो का मर्क़ज़ बनाने के बजाय अपनी ज़ात को तवज्जो का मर्क़ज़ बनाता है वह जन्नत के शौक और जहन्नम के ख़तरों में जीने के बजाए दुनिया के शौक और दुनिया के ख़तरे में जीता है। आदमी यह सब कुछ करता है और भूल जाता है कि अपनी इस रवैइये से वह अपने आप को जहन्नम के करीब ले जा रहा है और अपने आप को जन्नत के लिए नाअहेल साबित करता है। आह! वह इंसान जिस को उसी चीज़ का शौक़ नहीं जिसका उसे सबसे ज़्यादा शौक़ करना चाहिए आह! वह इंसान जो उसी चीज़ से सब से ज़्यादा बे खौफ़ है जिससे उसे सब से ज्यादा खौफ़ करने की ज़रूरत है।

# बेठिकाना

किसी आदमी के जहन्नमी होने के लिए यह बात काफी है कि वह हक़ के सामने न दबे और ताक़त के सामने दब जाए। शराफ़त और सज्जनता उसको प्रभावित न कर सके मगर जब डंडे का खतरा हो तो फ़ौरन अपना सर झुका दे।

ख़ुदा आख़िरत में अपनी हस्ती की परिपूर्णता के साथ ज़ाहिर होगा मगर दुनिया में वह दलील के रूप में लोगों के सामने आता है। दुनिया में जब एक व्यक्ति सच्ची दलील के आगे झुकता है। ऐसे ही लोगों के लिए आख़िरत में जन्नत के बाग़ हैं। उसके विपरीत जब एक व्यक्ति सच्ची दलील के आगे नहीं झुकता। यही वो लोग हैं जो बाग़ी और सरकश क़रार दे कर जहन्नम की आग में डाले जाऐंगे।

कमज़ोर आदमी की ज़बान से सच्ची बात सुन कर जब एक व्यक्ति उस को नहीं मानता तो वह सन्तुष्ट रहता है कि मेरा इससे कुछ बिगड़ने वाला नहीं। वह भूल जाता है कि उसने किसी कमज़ोर की बात का इनकार नहीं किया है बल्कि ख़ुदा की बात का इनकार किया है। यह ख़ुद ख़ुदा को नज़र अंदाज़ कर देता है और जो व्यक्ति ख़ुदा को नज़रअंदाज कर दे उसको सारी क़ायनात नज़रअंदाज़ कर देती है। उसके बाद उस ज़मीन व आसमान के अन्दर उसका कोई ठिकाना नहीं।

वो दिन आने वाला है जब शब्द वाले शब्दहीन हो जाएंगें। जब ठिकाना रखने वाले बिल्कुल बेठिकाना नज़र आएंगें जब मज़बूत सहारे वाले लोग एक तिनका भी न पाऐंगे जिसके सहारे वो अपने आप को खड़ा कर सकें।

# ख़ुश फहमियाँ

आदमी दूसरों को दुख पहुँचा कर अपनी खुशियों का महल निर्माण करने में लगा हुआ है। वह अपने पड़ोसियों को सताता है और दूर के लोगों में प्रतिष्ठित होने का उपाय कर रहा है। वह अपने व्यक्तिगत मामलात में अन्याय करके बाहर की दुनिया में न्याय का समर्थक बना हुआ है। वह अपने ख़िलाफ़ एक लफ़्ज़ सुनने के लिए तैयार नहीं मगर दूसरों के ख़िलाफ़ सब कुछ कहने और करने के लिए वह अपने आप को ख़ुदाई फ़ौजदार समझता है। उसे अपनी ग़लतियों की ख़बर नहीं मगर वह दूसरों की ग़लतियाँ जानने का माहिर बना हुआ है।

मगर ख़ुदा का इनाम उन लोगों को मिलता है जो अपने सम्बन्धियों के अधिकारों को अदा करें। जो अपने पड़ोसियों को अपनी शरारत से बचाएं। जो अपने अहले मामले के साथ इंसाफ करें। जो ख़ुद-पसंदी के बजाए खुदा पसंदी को अपनी ज़िंदगी का तरीक़ा बनाएं। जो लोगों से हक़ और न्याय की बुनियाद पर मामला करें न कि अकड़ और स्वार्थ की बुनियाद पर जो हक़ के आगे झुक जाए चाहे वह उन के ख़िलाफ़ हो। जो अपनी अना (मैं) को ख़ुदा के हवाले कर दें और ख़ुदा की दुनिया में बे अना बन कर रहने पर तैयार हो जाएं।

लोग जहन्नमी अंगारों में कूदते हैं और समझते हैं कि वह खूबसूरत फूलों से खेल रहे हैं वह दोज़ख़ के रास्तों में दौड़ रहे हैं और खुश हैं कि बहुत जल्दी वह जन्नत के बाग़ों में पहुंचने वाले हैं। आह! वह गिरोह जिसके पास झूठी ख़ुशफ़हमियों के सिवा और कोई पूंजी नहीं। आह! वह लोग जो ख़ुदा की दुनिया में अपने लिए एक दुनिया बनाना चाहते हैं जिसकी ख़ुदा ने इजाज़त नहीं दी।

## फ़रिश्ता या शैतान

ख़ुदा के वफ़ादार बन्दों के सलाहाकार फ़रिश्ते होते हैं। और ख़ुदा के बाग़ी बन्दों के सलाहकार शैतान। अपनी बोल चाल में और ज़िन्दगी के मामलात में कोई व्यक्ति जो तरीक़ा अपनाता है उसी से यह मालूम होता है कि कौन व्यक्ति किसको अपना सलाहकार बनाए हुए है।

जो व्यक्ति एख़्तेलाफ़ के समय तो विनम्रता एख़्तेयार करे और जब कोई हक़ उसके सामने पेश किया गया जाए तो हक़ के सामने झुक जाए वह फ़रिश्तों का साथी हो। ऐसा आदमी अपने कर्म से इस बात की पुष्टि करता है कि उसको यह तौफ़ीक़ मिली है कि ख़ुदा के फ़रिश्ते उसके सलाह देने वाले बने। क्योंकि यह फरिश्तों की सिफ़त है कि वह घमन्ड नहीं करते। वह किसी झिझक के बगैर हक़ को फौरन स्वीकार कर लेते हैं।

इसके विपरीत वह लोग जो इख़्तिलाफ़ के वक़्त ज़ुल्म और ना इन्साफी पर उतर आये और अहंकार पूर्ण तरीका इख़्तियार करें वह अपने अमल से यह साबित कर रहे हैं कि वह शैतान के साथी हैं। उन्होंने शैतान को अपने सलाहकार बना रखा है। क्योंकि क़ुरआन में घमन्ड और उदन्डता को शैतान की सिफ़ात बताया गया है।

हक़ीक़त यह है कि मौत और आख़िरत के मामलात से बेख़बरी है जिसने लोगों को सरकशी और बेइन्साफी के लिये ढीठ बना दिया है। अगर लोगों को मालूम हो कि कैसा भयानक दिन उनकी तरफ़ दौड़ा चला आ रहा है तो उनके चलते हुये कदम रुक जायें और उनके पास कोई बोलने के लिये शब्द न रहे। झूठी व्याख्यायें करने के बजाये वह फ़ौरन अपनी ग़लती को स्वीकार कर लें।

## जब ख़ुदा ज़ाहिर होगा

ख़ुदा को जब एक व्यक्ति पाता है तो ठीक उसी वक़्त वह इस हक़ीक़त को भी पा लेता है कि ख़ुदा ने उसको और उस कायनात को बेकार नहीं बनाया है। जिस कायनात का बनाने और चलाने वाला एक शक्तिशाली और बाख़बर ख़ुदा हो वहाँ यह नामुमकिन है कि इतना बड़ा कायनाती मारनबाग यूं ही खामोश खड़ा रहे कि कभी उसकी हक़ीक़त ज़ाहिर न हो।

इस तरह आदमी का ईमान उसको इस यक़ीन तक पहुंचाता है कि ज़रूर है कि एक दिन ऐसा आये जब कि वह ख़ुदा लोगों के सामने ज़ाहिर हो जाऐ जो कायनात की सारी घटनाओं के पीछे काम कर रहा है, फिर यही यक़ीन उसको यह भी बताता है कि कायनात के सृष्टा और स्वामी का प्रदर्शन इस तरह का गैर मुताल्लिक प्रदर्शन नहीं होगा जैसे अन्धेरी रात के बाद रोशन सूरज निकलता है। यह एक बाशऊर शक्तिशाली मालिक का जहूर होगा। ख़ुदावन्दे कायनात का ज़हूर कायनात के लिए अदालत के समान बन जाएगा। ख़ुदा के ज़ाहिर होते ही उसके तमाम सरकश और ख़ुद परस्त ख़ुदा की दुनिया में बिल्कुल बे क़ीमत हो जायेंगे। वह उस दिन मक्खी और मच्छर से भी ज़्यादा मामूली दिखायी देगें। दूसरी तरफ उसके ख़ुदा परस्त और वफ़ादार बन्दे अचानक कामयाबी का मुक़ाम हासिल कर लेंगें। ख़ुदा का ग़ैब में होना ख़ुदा के ज़ालिम बन्दों को उछल-कूद के मौके दिये हुए है। ख़ुदा का ज़ाहिर होना ख़ुदा के वफ़ादार बन्दों के लिये कामयाबी का दिन बन जायेगा। उसके बाद एक नई, ज़्यादा बहेतर और मुकम्मल दुनिया शुरू होगी जहाँ सरकश लोग हमेशा की जहन्नम में डाल दिये जायेंगे और वफ़ादार लोग हमेशा की ख़ुशियों से भरी लज़्ज़तों वाली जन्नत में ज़िन्दगी गुज़ारेंगे।

# मौत का सबक़

आदमी ज़िंदगी चाहता है मगर बहुत जल्द उसको मालूम होता है कि दुनिया में सिर्फ मौत उसका स्वागत करने के लिये खड़ी हुई है। ठीक उस वक़्त जब कि वह अपनी तरक्की की बुलन्दी पर पहुँच चुका होता है। मौत उसके और उसकी कामयाबियों के बीच रोड़ा बन जाती है। आदमी मजबूर होता है कि एक ऐसी दुनिया में प्रवेश करे जिसके लिये उसने कोई तैयारी नहीं की थी।

इन्सान अपनी महानता का महल निर्माण करता है मगर मौत का तूफ़ान उसको तिनको की तरह उड़ाकर यह सबक देता है कि इन्सान को इस दुनिया में कोई कुदरत हासिल नहीं। इन्सान कहता है कि मैं अपना मालिक हूँ मगर तक़दीर उसको कुचल कर उसे बताती है कि तेरा मालिक कोई और है। इन्सान मौजूदा दुनिया में अपनी इच्छाओं का बाग़ लगाना चाहता है अगर मौत उसकी योजना को बर्बाद करके यह सबक देती है कि अपने लिए दूसरी दुनिया तलाश करो क्योंकि मौजूदा दुनिया में तुम्हारी आरज़ुओं का पूरा होना सम्भव नहीं।

मौत़ हमारी ज़िन्दगी की सबसे बड़ी शिक्षक है। मौत हर आदमी को ऐसे प्रश्न के बारे में सोचने पर मजबूर कर देती है जिसके जवाब में जिन्दगी के सारे रहस्य छुपे हुए हैं। मौत हमको बताती है कि हम अपने मालिक आप नहीं हैं। मौत हमको बताती है कि मौजूदा दुनिया में हमारी ज़िन्दगी महज़ वक़्ती है। मौत हमको बताती है कि मौजूदा दुनिया वह मुक़ाम नहीं जहाँ हम अपनी तमन्नाओं को हासिल कर सकें। मौत हमको जीना सिखाती है। मौत हमको बताती है कि सच्ची कामयाबी को हासिल करने के लिए हमें क्या करना चाहिये।

# झूठी बड़ाई

किसी व्यक्ति ने अपनी दुनिया की ज़िन्दगी को कामयाब बना लिया हो तो अकसर वह इस ग़लतफ़हमी में पड़ जाता है कि उसकी आख़िरत भी ज़रूर कामयाब होगी। हालाँकि दोनों में कोई लाज़िमी सम्बन्ध नहीं।

दुनिया की बड़ाई, बड़ाई नहीं। वह सिर्फ इम्तेहान के मक़सद से है। किसी को अच्छे हालात मिले या किसी को बुरे हालात, दोनों इम्तेहान के लिए हैं। यह आदमी की जाँचने के परचे हैं न कि उसके कर्म का फल। दूसरों के मुक़ाबले में आप को कोई बड़ाई मिल जाए या इज़्ज़त हासिल हो जाए तो अपने मुक़ाबले में दूसरों को कमतर न समझें। क्योंकि बड़े और छोटे दोनों आख़िरकार बराबर हो जाने वाले हैं। मौत दोनों को एक सतह पर पहुँचा देगी। उसके बाद बड़ाई उसके लिए होगी जिसको ख़ुदा बड़ा बनाए, और छोटा वह होगा जो ख़ुदा के नज़दीक छोटा करार पाए।

दुनिया इम्तेहान की जगह है। यहाँ आदमी हक़ का झूठा पोशाक पहनकर अपने को ऊँचे स्थान पर बिठा लेता है। मगर बहुत जल्द वह वक़्त आने वाला है जब कि परदा हटे और हर आदमी अपनी अस्ल सूरत में सामने आ जाए। उस वक़्त कितने इज़्ज़त वाले ज़िल्लत के घड़े में पड़े हुए दिखाई देंगे। कितने इन्साफ और इन्सानियत का नारा लगाने वाले इन्साफ़ और इन्सानियत के क़ातिल करार दिए जाएंगे, कितने बहादुरी का टाइटिल लेने वाले बुज़दिली की कालिख से काले हो रहे होंगे। कितने सच्चाई पर फ़िदा होने वाले इस हाल में नज़र आएंगे मानोकि सच्चाई से उनका कोई सम्बन्ध ही नहीं था।

# सबसे बड़ी मजबूरी

ग़रीब आदमी को यह निराशा होती है कि उसके पास अच्छा मकान नहीं। मगर दूसरी तरफ़ उन लोगों का हाल भी बहुत ज़्यादा अलग नहीं जिनको एक ग़रीब आदमी रश्क की नज़रों से देखता है। दौलतमंद आदमी के लिए पैसा होना उससे ज़्यादा बड़े मसले पैदा करता है जो ग़रीब आदमी को पैसा ना होने की सूरत में नज़र आते हैं। एक बड़ा आदमी जिस के गिर्द इन्सानों की भीड़ लगी हुई हो, अंदर से उतना बेचैन होता है कि रात को गोली खाए बग़ैर उसे नींद नहीं आती। इस दुनिया में हर आदमी दुखी है, कोई एक हालत में और कोई दूसरी हालत में।

मान लीजिये कोई आदमी खुशियों का ख़ज़ाना अपने पास जमा करे तो वो भी सुबह से शाम तक के लिए होगा। उसके बाद अचानक मौत का बेरहम, फ़रिश्ता आएगा और उसको इस तरह पकड़ेगा कि न उसकी दौलत उसको बचा सकेगी और न उसकी फौज। हवाई जहाज़ के यात्री पर भी मौत इसी तरह काबू पा लेती है जिस तरह एक पैदल चलने वाले पर। वह आलीशान महलों में भी इसी तरह आसानी से प्रवेश कर जाती है। जिस तरह एक मामूली मकान में। मौत आदमी की सबसे बड़ी मजबूरी है। मौत आदमी को याद दिलाती है कि वह आज से ऊपर उठकर सोंचे। वह कामयाबी को ज़िन्दगी के उस पार तलाश करे। कामयाब वह है जो मौत से सबक ले ले। जो व्यक्ति यह सबक लेने से महरूम रहे उसकी खुशियों के चेराग़ बहुत जल्द बुझ जायेंगे। वह अपने को एक ऐसे भयानक अंधेरे में पायेगा जहाँ वह हमेशा ठोकरें खाता रहे और कभी उससे निकल न सके।

# ज़िंदगी का सफ़र

हर आदमी उम्मीदों और तमन्नाओं की एक दुनिया अपने मन में लिए हुए है। वह समझता है कि मैं अपनी उम्मीदों की दुनिया की तरफ बढ़ रहा हूँ। अपने सपनों वाले कल की तरफ चला जा रहा हूँ। मगर उसकी मौत उसे आकर बताती है कि वह अपनी तमन्नाओं वाली दुनिया की तरफ नहीं बल्कि ख़ुदा की दुनिया की तरफ बढ़ रहा था। वह दुनिया की मंज़िल के बजाए आख़िरत (परलोक) की मंज़िल की तरफ चला जा रहा था। आदमी कहाँ जा रहा है और कहा पहुँच रहा है। मगर किसी को इसकी खबर नहीं। आदमी अपने बच्चों के भविष्य की ख़ातिर अपना सब कुछ लगा देता है मगर इससे पहले कि वह अपने बच्चों के भविष्य को देख कर खुश हो, खुद अपने उस भविष्य की तरफ हांक दिया जाता है जिसके लिए उसने कोई तैयारी नहीं की थी। आदमी अपने आराम के लिए एक मकान खड़ा करता है मगर अभी वह वक़्त नहीं आता कि वह अपने पसन्दीदा मकान में चैन के साथ रहे कि मौत उसके और उसके मकान के बीच रोड़ा बन जाती है। आदमी कमाता है वह समझता है कि मैं इज़्ज़त और तरक़्क़ी की बुलन्दियों पर अपने को बिठाने जा रहा हूँ मगर बहुत जल्दी उसको मालूम होता है कि आने वाला दिन उसके लिए जिस चीज़ का इन्तेज़ार कर रहा था वह एक सुनसान क़ब्र थी नाकि इज़्ज़त और तरक़्क़ी की चमक-दमक आदमी अपने वक़्ती ऐशो-आराम को खोना नहीं चाहता इसलिए वह खुली खुली हक़ीक़तों को मानने के लिए तैयार नहीं होता। अगर वह जाने कि उसका वक़्ती ऐशो-आराम हमेशा के अज़ाब में बदलने वाला है। तो अचानक उसकी ज़िंदगी कुछ से कुछ हो जाए।

# अजीब महरूमी

लोगों की दौड़ धूप आज किस चीज़ के लिए है खाना, कपड़ा, मकान, इज़्ज़त, दौलत और ख़ुशियों की ज़िन्दगी के लिए। हर व्यक्ति अपनी सारी शक्ति बस इन्ही चीज़ों को पाने में लगाये हुये है। इन्हीं के मिलने से लोग ख़ुश होते हैं और इन्हीं के न मिलने से ना ख़ुश।

मगर मौत का वाक़िया बताता है कि यह ख़ुशियाँ मौजूदा दुनिया में आदमी के लिए ज़रूरी नहीं। यहाँ अगर कोई व्यक्ति उन सारी चीज़ों को पा ले तब भी वह बहुत ही कम समय के लिए उन्हें पाता है। पचास वर्ष के संघर्ष के बाद जब आदमी अपनी तरक़्क़ियों के किनारे पहुंचता है तो ठीक उसी वक़्त मौत आ जाती है और अचानक उसकी सारी तरक़्क़ियों को तहस नहस कर देती है।

यह स्थिति बताती है कि मौजूदा दुनिया इन चीज़ों के पाने की अस्ल जगह नहीं। इनको पाने की जगह हक़ीक़तन मौत के बाद आने वाली दुनिया है जहाँ आदमी को हमेशा रहना है। लोग अपनी सारी शक्तियों को दुनिया के भविष्य को बनाने में लगाए हुए हैं। आख़िरत के भविष्य को बनाने की किसी को फ़िक्र नहीं। मौजूदा अस्थायी दुनिया मे लोग सबसे ज़्यादा जिस चीज़ के इच्छुक हैं उसी से वह ज़िन्दगी के अगले लम्बे मर्हले में सबसे ज़्यादा बेपरवाह हो गए हैं। आदमी उसी चीज़ को खो रहा है जिसको कि वह सबसे ज़्यादा पाना चाहता है। महरूमी की यह किस्म भी कैसी अजीब है।

# ख़ुदा का साया

वह वक़्त कैसा अजीब होगा जब लोगों को मालूम होगा कि अमली के नाम पर दुनिया में वह जो कुछ करते रहे वह बेअमली का बदतरीन रूप था। लोग अपने आप को ऊपर उठा कर गर्व करते रहे हालांकि उनके लिए गर्व की बात यह थी कि वह ख़ुदा की उस दुनिया में अपने आप को झुका दे। वह अपनी ग़लतियों की स्पष्टीकरण को कामयाबी समझते रहे हालांकि उनकी कामयाबी यह थी कि वह अपनी ग़लतियों को स्वीकार कर ले। उनको ज़बान इसलिए दी गई थी कि उसको अल्लाह की तारीफ़ में इस्तेमाल करें मगर वह अपनी ज़बान को इन्सानों की तारीफ़ में इस्तेमाल करते रहे। उनके अन्दर खौफ़ और मोहब्बत के जज़बात इसलिए रखे गए थे कि वह उनको अपने रब के लिए वक़्फ़ कर दें। मगर वह दूसरी चीज़ों को अपने खौफ़ व मोहब्बत के जज़बात का केन्द्र बनाए रहे। उन्होंने माल जमा करने को सबसे बड़ी चीज़ समझा हालाँकि उनके लिये सबसे बड़ी चीज़ यह थी कि वह अपने माल को अल्लाह की राह में दे कर बेमाल हो जाए। उनका असली कमाल यह था कि वह कमज़ोरों का लिहाज़ करें मगर वह कमज़ोरों को नज़र अंदाज करके ताक़तवरों का स्वागत करते रहे। उनके लिए ज़्यादा बेहतर यह था कि माइने के ख़ामोश समन्दर में गोता लगाएं मगर वह शोर व गुल के हंगामे खड़े करने में व्यस्त रहे। उनकी तरक़्क़ी का राज़ यह था कि वह अपने जीवन का हिसाब-किताब करने वाले बनें मगर वह दूसरों के हिसाब-किताब करने मे लगे रहे। हर व्यक्ति ने अपनी कल्पनाओं की एक दुनिया बना रखी है और अपने आप को उसके अन्दर पा कर सन्तुष्ट है। मगर (क़ियामत) प्रलय ऐसी तमाम घरिन्दों को तोड़ देगी। इस वक़्त सिर्फ वह व्यक्ति सुरक्षित होगा जो ख़ुदा के घर में शरण लिये हुए था। जिसने अपने लिए ख़ुदा का हिदायत हासिल कर लिया था।

## क़ब्र का दरवाज़ा

क़ब्र दूसरी ज़िंदगी का दरवाज़ा है। इस दरवाज़े के ज़रिए आदमी आज की दुनिया से निकल कर कल की दुनिया में दाखिल हो जाता है। हम में से हर व्यक्ति जो आज कब्र के इस पार है वह कल अपने आप को क़ब्र के उस पार पाएगा। हर व्यक्ति जो ज़िंदा है वह मौत के मुक़ाबले में इस तरह हार जाने वाला है कि कोई न होगा जो उसको बचा सके। मगर इस सबसे बड़ी हक़ीक़त को इंसान सबसे ज़्यादा भूला हुआ है। हममें से हर एक ने यह मंज़र देखा है कि किसी व्यक्ति के लिए क़ब्र का दरवाज़ा खुला और फिर हमेशा के लिए उसके ऊपर बन्द हो गया। मगर हम में से बहुत कम लोग हैं जो यह जानते हों कि खुद उनके लिये भी यह दरवाज़ा खोला जाएगा और फिर हमेशा के लिए बन्द हो जायेगा जिस तरह वह दूसरों के ऊपर हमेशा के लिये बन्द हो चुका है। आदमी की यह नफसियात (साईकोलाजी) कैसी अजीब है कि दूसरों को वह हर रोज मरते हुए देखता है मगर खुद इस तरह जिंदगी गुज़ारता है मानो उसको हमेशा इसी दुनिया में रहना है, उसके अपने लिए मौत का वक्त कभी आने वाला नहीं। वह देखता है कि लोग एक एक करके रोज़ाना खुदा के यहां पेशी के बुलाया जा रहा है। अगर खुद अपने को इस तरह अलग कर लेता है मानो कि खुदाई अदालत में हाज़री का यह दिन उस के अपने लिए कभी नहीं आएगा। हम में से हर व्यक्ति जिंदगी के मुकाबले में मौत से ज़्यादा करीब है। यह एहसास अगर ज़िदा हो तो आदमी हर मौत को अपनी मौत समझे। वह दूसरे का जनाज़ा देखे तो उसको ऐसा मालूम हो मानो खुद उसकी लाश उठा कर क़ब्र की तरफ ले जायी जा रही है।

# बोलना बंद हो जाएगा

हर व्यक्ति जो ज़िंदा है वह एक रोज़ मरेगा। हर आदमी जो देखता है और बोलता है, निश्चित रूप से एक दिन उस की आँख बन्द होगी और उसका बोलना बन्द हो जाएगा। हर आदमी पर वह वक्त आना है जब कि वह मौत के दरवाज़े पर खड़ा कर दिया जाए। उस वक्त उसके पीछे दुनिया होगी और उसके आगे आखिरत। वह एक ऐसी दुनिया को छोड़ रहा होगा जहाँ वह दोबारा कभी नहीं आएगा और एक ऐसी दुनिया में प्रवेश कर रहा होगा जिससे उसको कभी निकलना नसीब नहीं होगा। वह अपने कर्म-स्थल से हटा कर वहाँ डाल दिया जाएगा। जहाँ वह अपने कर्म का चिरस्थायी अन्जाम भुगतता रहे।

हम ज़िंदगी के मुकाबले में मौत से ज़्यादा करीब हैं। लोग समझते हैं कि वह जिंदा है हालांकि ज़्यादा सही बात यह है कि वह मरे हुए हैं। वह मौत जिसका कोई वक्त निश्चित न हो , वह मानो कि हर वक्त आ रही है। ऐसी मौत के लिए यह कहना ज़्यादा सही होगा कि वह आ चुकी है,बज़ाए इसके कि यह कहा जाए कि वह आने वाली है।

हर व्यक्ति ज़िंदगी से मौत की तरफ यात्रा कर रहा है। किसी की यात्रा दुनिया की खातिर है और किसी की आखिरत की खतिर। कोई सामने की चीज़ों में जी रहा है और कोई छिपी हुई चीज़ों मे। मौजूदा दुनिया में दोनों बज़ाहिर एक जैसे नज़र आते हैं। मगर मौत के बाद आने वाली मन्ज़िल के ऐतबार से दोनों का हाल समान नहीं। जो व्यक्ति खुदा और आख़िरत (परलोक) में जी रहा है वह अपने को बचा रहा है और जो दुनिया की दिलचशपियों और अपने मन की खुशियों मे जी रहा है वही वह व्यक्ति है जो बर्बाद हुआ।

# आख़िरी वक़्त

हर व्यक्ति का एक आख़िरी वक्त निर्धारित है। किसी पर सोते हुए वह वक्त आ जाता है। कोई राह चलते पकड़ लिया जाता है और कोई बिस्तर पर बीमार होकर मरता है। यह वक्त बहरहाल हर एक पर आना है। चाहे वह एक सूरत में आए या दूसरी सूरत में।

मौत की यह घटना भी कैसी अजीब है। एक जीती जागती ज़िन्दगी अचानक बुझ जाती है। एक हंसता हुआ चेहरा पल भर में इस तरह खत्म हो जाता है जैसे कि वह मिट्टी से भी ज़्यादा बेकीमत था। हौसलों और तमन्नाओं से भरी हुई एक ज़िन्दगी इस तरह मंजरे आम से हटा दी जाती है जैसे उसके हौसलों और तमन्नाओं की कोई हक़ीक़त ही न थी। ज़िन्दगी किस क़दर अर्थपूर्ण है। मगर उसका अन्जाम उसको किस कदर अर्थहीन बना देता है। आदमी देखने में कितना आज़ाद है, मगर मौत के सामने वह कितना मजबूर नज़र आता है। इन्सान अपनी ख्वाहिशों और तमन्नाओं को कितना ज़्यादा प्रिय रखता है। मगर कुदरत का फ़ैसला उसकी ख्वाहिशों और तमन्नाओं को कितनी बेरहमी के साथ कुचल देता है। आदमी अगर सिर्फ़ अपनी मौत को याद रखे तो वह कभी बग़ावत न करे, बेहतर ज़िन्दगी का मात्र अकेला रहस्य यह है कि हर आदमी अपनी सीमा के अन्दर रहने पर राज़ी हो जाए, और मौत निसन्देह उस हकीकत की सबसे बड़ी खबरदार करने वाली है।

मौत आदमी को बताती है कि वह किसी को कमतर न समझे। क्योंकि वह वक्त आने वाला है जब कि वह खुद सबसे ज़्यादा कमतर होगा। मौत आदमी को याद दिलाती है कि वह किसी को न दबाए। क्योंकि बहुत जल्द वह खुद हज़ारों मन मिट्टी के नीचे दबा हुआ होगा।

# आने वाला दिन

मौत एक किस्म की गिरफ्तारी है। मौत वह दिन है जब कि फ़रिश्ते किसी आदमी को पकड़ कर उसके मालिक के पास पहुँचा देते हैं।

गिरफ्तारी का यह दिन हर शख्स की तरफ़ तेज़ी से दौड़ा चला आ रहा है। मगर लोगों का हाल यह है कि वह दूसरों की गिरफ़्तारी को तो खूब जानते हैं मगर खुद अपनी गिरफ़्तारी की उन्हे ख़बर नहीं। वह दूसरों के पकड़े जाने का बहुत चर्चा करते हैं। मगर अपने लिए आने वाले उस दिन को याद नहीं करते जबकि खुदा के फरिश्ते बे रहमी के साथ उन्हें पकड़ कर मालिके कायनात की अदालत मे पहुँचा देंगे।

आदमी दूसरों की कमियों को जानने का माहिर बना हुआ है। हालांकि जानने वाला वह है जो अपनी कमियों को जानता हो। आदमी लफ़्जी जवाब दे कर अपने को सुरक्षित समझ लेता है। हालांकि सुरक्षित वह है जो अपनी गलतियों को मान ले।

खुदा की गिरफ़्तारी का दिन तमाम भयानक दिनों से ज़्यादा भयानक है। उस का अगर वाकई एहसास हो जाए तो आदमी की पूरी ज़िन्दगी बदल जाए। वह इस दुनिया में रहते हुए आखिरत के आलम में पहुँच जाए। वह खुदाई इन्साफ़ के उस तराजू पर आज ही अपने को खड़ा कर ले जिस पर दूसरे लोग मरने के बाद खड़े किए जाने वाले हैं।

आदमी अगर खुदा की पकड़ से डरता हो तो गिरफ़्तारी को वह अपनी गिरफ़्तारी समझे। दूसर के हाँथ में हथकड़ी लगती हुई देखे तो उसको ऐसा महसूस हो मानोकि खुद उसको बांध कर कायनात की अदालत में ले जाया जा रहा है।

# मौत की याद

आज लोगों के पास शब्द हैं जिनको वह आसानी से दोहरा रहे हैं। मगर एक वक्त आने वाला है जब कि उनके शब्द छिन चुके होगें। वहाँ कोई सुनने वाला न होगा जो उनकी बातों को सुने, कोई प्रेस ना होगा जो उन चीजों को छापे,कोई लाउड स्पीकर ना होगा जो उनके शब्दों को हवा मे भिखेरे। उनकी कल्पनाओं का महल गिर चुका होगा। वह निराशा और मायूसी की हालत में चारों तरफ देखेंगें और कुछ ना कर सकेंगे।

आदमी अगर सिर्फ मौत को याद करे तो उसके लिए वह सारी चीज़े बिल्कुल बे हकीकत हो जाऐं जिनकी खातिर वह जुल्म और अन्याय करता है। और अपने लिए जहन्नम की आग में जलने का खतरा मोल लेता है। जिस माल को आदमी अपना सब कुछ समझता है वह उस को बरत नहीं पाता कि मौत आ जाती है और उसको उसके कमाए हुए माल से जुदा कर देती है। अगर आदमी इस हकीकत को याद रखे तो वह माल के पीछे अपने को दीवाना न बनाए। आदमी को किसी से शिकायत होती है । वह उसको मिटाने में लग जाता है। मगर अभी वह अपने विनाशकारी योजना को पूरा नही कर पाता कि मौत उसके और उसके दुश्मन के बीच रोड़ा बन जाती है। अगर यह हक़ीक़त आदमी के ज़ेहन में ताज़ा हो तो वह कमी किसी के खिलाफ कोई कारवाई न करे। कभी किसी को बे इज्ज़त करने की योजना बनाए।

ऐसा घर जो कल के दिन जल जाने वाला हो उसको कोई नहीं खरीदता। ऐसा शहर जो अगले क्षण भूचाल की चपेट में आने वाला हो उसमें कोई आबाद नहीं होता। मगर अजीब बात है कि मौत के भयानक भूचाल के मामले में हर व्यक्ति यही ग़लती कर रहा है।

# कैसी अजीब ग़फ़लत

आदमी जब बूढ़ा होता है तो वह बिल्कुल नए अनुभव का सामना करता है। ज़िंदगी अब उसके लिए अपनी तमाम हक़ीक़त खो देती है। उसको नज़र आता है कि जल्द ही वह एक नामालूम दुनिया की तरफ छलांग लगाने वाला है। वह चाहता है कि कोई हो जो उस निर्णायक लम्हे में उसको उम्मीद की किरन दे सके। मगर मौत अचानक उसको इस तरह अपने कब्ज़े में कर लेती है। कि उसके लिए उसने कोई तैयारी नहीं की थी। आदमी हर किस्म की आज़ादी से वंचित करके मजबूरी और बेबसी की दुनिया में डाल दिया जाता है।

यह मौत हर आदमी का पीछा कर रही है। बचपन और जवानी में आदमी उसे भूला रहता है। मगर आख़िरकार तक़दीर का फ़ैसला ग़ालिब आता है। बुढ़ापे में जब कि वह किसी काम के क़ाबिल नहीं होता उसकी मौत अचानक उसको एक ऐसी दुनिया में पहुँचा देती है जहाँ उसके लिए अंधेरे में भटकने के सिवा और कुछ नहीं।

आदमी दिन की रोशनी में यह समझ कर अपनी व्यवस्था बनाता है कि कुछ देर के बाद रात का अंधेरा छा जाने वाला है और रात को इस यक़ीन के साथ सोता है कि चन्द घण्टों के बाद दोबारा सुबह की रोशनी चारों तरफ फैल जाएगी। मगर आखिरत की दुनिया का किसी को होश नहीं। कोई नहीं जो आने वाली मौत को इस तरह देखे जिस तरह दिन का एक यात्री शाम को देखता है। और ऐसे लोग तो शायद न के बराबर हैं जो मौत के दूसरी तरफ़ जहन्नम को भड़कता हुआ देख रहें हों। हर आदमी इस तरह ज़िंदगी गुज़ार रहा है जैसे मौत भी दूसरो के लिए है और जहन्नम भी दूसरों के लिए।

# आदमी अकेला है

मौत यह साबित करती है कि हर व्यक्ति अकेला है। दुनिया में आदमी दूसरों के साथ होता है। हर व्यक्ति एक परिवार में शामिल होता है। हर व्यक्ति अपने को किसी न किसी समुदाय से जुड़ा हुआ रहता है। मगर मौत अत्यन्त निर्दयता के साथ आदमी को हर चीज़ से अलग कर देती है। मौत आदमी को उसके साथियों से जुदा करके उसको तन्हा खड़ा कर देती है। मौत इस हक़ीक़त को याद दिलाती है कि आदमी अकेला है। कोई उसका साथी और मददगार नहीं ।

यह तर्जुबा हर रोज़ और हर मुकाम पर होता है। आदमी अपने सामने देखता है कि एक व्यक्ति अपने परिवार और अपने गिरोह मे जी रहा था। इसके बाद मौत आई और उसने उसको खींच कर एक ऐसे गढ्ढे में पहुँचा दिया जहाँ न कोई उसके दाऐं होता और न कोई इसके बाऐं। कैसा अजीब और कैसा खतरनाक है यह अनुभव को देखकर सबक़ ले।

दुनिया की ज़िंदगी में हर मौक़े पर बहुत से साथी उसकी मदद के लिए खड़े होने वाले थे। मगर मौत के बाद की ज़िन्दगी में वह तन्हा अपनी क़ब्र को बसाता है। वह फ़रिश्तों से मुक़ाबले के लिए अकेला होता है। वह खुदा के सामने इस तरह पहुँचता है कि उसके आगे पीछे कोई दूसरा नहीं होता।

इन्सान अपने को बहुत कुछ समझता है मगर इन्सान बे कुछ है। मौत इसलिए आती है कि वह आदमी को उसकी इस हक़ीक़त से अन्तिम सीमा तक सचेत कर दे।

# आख़िरत का तूफ़ान

हमारी मौजूदा दुनिया और आखिरत की दुनिया के दरमियान मौत की गैर यक़ीनी दीवार रूकावट है। हर पल यह खतरा है कि मौत उस दीवार को तोड़ दे और उसके बाद आख़िरत की संगीन हक़ीक़तें एक बे पनाह सैलाब की तरह हमारे ऊपर फट पड़ें। उस वक्त कोई ज़ोर और कोई शब्दों की जादूगरी काम न आएगी। आदमी बिल्कुल बे सहारा होकर अपने मालिक के सामने खड़ा होगा। वह तमाम लोग तबाही के स्थायी जहन्नम में डाल दिए जाऐंगे जो दुनिया के दिखावों में इस तरह खोये हुए थे कि कोई नसीहत की बात सुनने के लिए तैयार ही न होते थे। सिर्फ़ वह व्यक्ति बचेगा जिसे मालिके कायनात के सामने हिसाब के लिए पेश होने से पहले खुद अपना हिसाब कर लिया होगा। सबसे ज़्यादा ग़ाफिल वह है जो आने वाले दिन से ग़ाफिल है। उसकी गफ़लत उसको बचाने वाली साबित न होगी। सबसे ज़्यादा बे सहारा वह है जो दुनियाबी असबाब को अपना सहारा समझे हुए है हालांकि यह सहारे आखिरत में मकड़ी के जाले से भी ज़्यादा कमज़ोर साबित होंगे।

बहुत से दीवार उठाने वाले अपनी दीवार को गिरा रहे हैं। बहुत से लोग जो अपने को दूसरों से बड़ा समझ रहे हैं वह दूसरों के पैरों तले रौंदे जाऐंगे। यह उस दिन होगा जब आखिरत का तूफान संसार को तहसनहस कर देगा। उस वक्त खुदा अपने फ़रिश्तों के साथ ज़ाहिर होगा। उस वक्त सारे आदमियों से पूछा जाएगा कि उन्होने अपने पीछे क्या छोड़ा और अपने आगे के लिए क्या रवाना किया।

# यह बेख़बरी

आज लोगों के लिए सबसे आसान काम बोलना है और सबसे मुश्किल काम चुप रहना। मगर बहुत जल्द वह दिन आने वाला है जबकि बोलना इतना संगीन काम मालूम होगा कि लोग सोचेंगे कि काश वह सारी उम्र अपनी ज़बान को बन्द रखते। काश उन्होंने अपने होंठों को सी लिया होता। काश वह शब्द रखने के बावजूद शब्दहीन हो जाते।

आदमी के वजूद में ज़बान सबसे ज़्यादा फित्ने की चीज़ है मगर आदमी अपनी ज़बान ही का सबसे ज़्यादा गलत इस्तेमाल करता है। ज़बान हक़ के स्वीकार के लिए है मगर आदमी अपनी ज़बान को हक़ के इन्कार के लिए इस्तेमाल करता है। ज़बान इस लिए है कि आदमी उस से भलाई के शब्द बोले मगर वह अपनी ज़बान से बुराई के शब्द निकालता है। जब किसी से मामला पड़ता है तो आदमी एक जवाब दे कर संतुष्ट हो जाता है। अगर उसको एहसास हो कि आख़िरी जवाब किसी इन्सान को नहीं बल्कि खुदा को देना है तो वह बोलने के बजाय चुप रहना पसन्द करे। प्रतिष्ठा को बचाने के बजाए प्रतिष्ठा खो देना उसकी नज़र में अधिक प्रिय हो जाए।

इस तरह की तमाम बातों की वजेह यह है कि आदमी ने गलत तौर पर अपने आप को अपना मालिक समझ लिया है। उसको याद नहीं कि बहुत जल्द उस का पैदा करने वाला और मालिक ज़ाहिर होगा और मालिक ज़ाहिर होगा और उसको गिरफतार करके बेबसी के गढ्ढे में फेंक देगा। अगर लोगों को मालूम हो कि कल उन का क्या अन्जाम होने वाला है तो उनका आज उनके लिए बेमज़ा हो जाए। उनकी ढिठाई अचानक विनम्रता में बदल हो जाए। यह सिर्फ आने वाले कल से बेख़बरी है जिस ने लोगों के आज को उनके लिए मज़ेदार बना रखा है।

# क़ियामत का चिंघाड़

जो लोग सही अर्थों में अपने रब को पा लें वह एक और ही इन्सान बन जाते हैं। देखने में वह आम आदमियों की तरह होते हैं मगर उनके अन्दर का इन्सान बिल्कुल दूसरा इन्सान हो जाता है। उनकी जीने की सतह आम इन्सानों से अलग हो जाती है। ऐसे लोग मौजूदा दुनिया में रहते हुए भी आख़िरत को वातावरण में पहुँच जाते है। दुनिया की हर चीज़ उनके लिए आखिरत का आइना(दर्पण) बन जाती है। आज की रौनकों में उन्हें जन्नत की झलकियाँ दिखाई देती हैं। आज की कड़वाहट उनको नरक की याद दिलाने वाली बन जाती है। वह दुनिया में आख़िरत को देख लेते हैं। वह ज़िन्दगी में मौत का पैग़ाम सुन लेते हैं। मोमिन हक़ीक़त में वही, है जो दुनिया में आखिरत की हालत को देख ले। जो हालते गैब (unseen) में रहते हुए हालते शहूद (seen) में पहुँच जाए। गैर मोमिन पर भी वह दिन आएगा जबकि वह आख़िरत की दुनिया को अपनी आँखो से देखेगा। मगर यह देखना उस वक्त होगा जबकि क़ियामत की चिंघाड़ ज़ाहिरी परदों को फाड़ देगी। जब गैब और शहूद का फर्क मिट जाएगा। मगर उस वक़्त का देखना किसी के कुछ काम न आएगा। क्योंकि वह बदला पाने का वक्त होगा न कि ईमान व यक़ीन का सबूत देने का।

क़ियामत का फ़रिश्ता सूर (नरसिंहा) लिए खड़ा है कि कब हुक्म हो और फूँक मार कर सारे आलम का तहस-तहस कर दे। यह बहुत ही भयानक वक्त होगा। उस वक्त आदमी बोलना चाहेगा। मगर वह बोल न सकेगा। वह चलना चाहेगा मगर उसके पाँव चलने की ताक़त खो चुके होंगे।

# फ़ैसला का दिन

वह दिन आने वाला है जब तमाम अगले पिछले पैदा होने वाले ख़ुदा के पास उस हाल मे जमा किए जाऐंगे कि एक मालिके क़ायनात के सिवा सब की आवाज़ें पस्त होंगी। उस दिन सिर्फ सच्चाई में वज़न होगा। उसके सिवा तमाम चीज़ें अपना वज़न खो चुकी होंगी ये फैसले का दिन होगा।

हमारे और उस दिन के दरमियान सिर्फ मौत का फासला है। हम में से हर व्यक्ति एक ऐसे अन्जाम कि तरफ चला जा रहा है जहाँ उसके लिए या तो स्थाई ख़ुशी है या स्थायी अज़ाब। हर लम्हा जो गुज़रता है वह हमको उस आखिरी अन्जाम से करीब तर कर देता है जो हम में से हर एक के लिए तयशुदा है। हर बार जब सूरज डूबता है तो वह हमारी उम्र में एक दिन और कम कर देता है इस उम्र में जिसके सिवा आने वाले भयानक दिन की तैयारी का और कोई मौक़ा नहीं। हमको ज़िन्दगी के सिर्फ चन्द दिन हासिल हैं। ऐसे चन्द दिन जिनका अन्जाम असीमित समय तक भुगतना पड़ेगा जिसका आराम बेहद ख़ुशगवार है और जिसकी तक़लीफ बेहद दर्दनाक इससे पहले कि मौत आकर हमको इस दुनिया से जुदा कर दे जहाँ सिर्फ करना है और उस दुनिया में पहुँचा दे जहाँ करना नहीं सिर्फ पाना है हमारे लिए सिर्फ ज़रूरी है हम अपनी ज़िन्दगी का एहतिसाब कर लें। हम सब को एक रोज़ मालिके कायनात के सामने खड़ा होना है। कैसे ख़ुश नसीब हैं वह लोग जिनको ख़ुदा अपने वफादार बन्दों में शुमार करे क्योंकि वही लोग उस दिन इज़्ज़त वाले होंगे। कैसे बदबख्त हैं वह लोग जिनको ख़ुदा रद कर दे क्योंकि उसके बाद उनके लिए रूसवाई और अज़ाब के सिवा और कुछ नहीं।

# एक ही मौका

इन्सान एक चिरस्थायी प्राणी है। उसकी उम्र का थोड़ा सा हिस्सा मौजूदा दुनिया में गुज़रता है और बाकी सारा हिस्सा आखिरत की दुनिया में जो मरने के बाद सामने आने वाली है। मौजूदा दुनिया कर्म की जगह है और अगली दुनिया अपने कर्म का फल पाने की जगह।

आखिरत की दुनिया के लिए कोई व्यक्ति जो कुछ कर सकता है इसी मौजूदा दुनिया में कर सकता है। उसके बाद करना नहीं। सिर्फ भुगतना है। मौजूदा जिन्दगी की अवधि बहुत कम है। कितने लोग है जिनको हमने अपनी आँखो से देखा था मगर आज वह हमारे बीच नहीं हैं। इसी तरह जो लोग आज हमको देख रहे हैं एक वक्त आएगा कि हम उनके देखने के लिए उस दुनिया में मौजूदा न होगें। हम अपनी उम्र पूरी करके अपने रब के पास जा चुके होगें।

मौजूदा ज़िंदगी वह पहला और आखिरी लम्हा है जबकि इन्सान अपने चिर स्थायी भविष्य के निर्माण के लिए कुछ कर सकता है। न उससे पहले ऐसा कोई अवसर इन्सान को मिला था और न उसके बाद ऐसा कोई मौका इन्सान को मिलेगा। हम एक ऐसे इम्तेहान से गुज़र रहे हैं जिसका एक लाज़मी नतीजा सामने आने वाला है। और बहुत जल्द हम एक ऐसे लाज़मी नतीजे से दो चार होंगे जिससे बचने की हमारे पास कोई उपाय नहीं।

याद रखिए ज़िन्दगी का हर पल जो आप व्यतीत कर रहे हैं आखिरी तौर पर व्यतीत कर रहें हैं। क्योंकि वह दोबारा आपके लिए वापस आने वाला नहीं। हमारे लिए सिर्फ़ एक ही मौक़ा है। हम चाहे उसको इस्तेमाल करें या उसको खो दें। यह दुनिया हमको सिर्फ एक बार दी गई है चाहे यहाँ हम अपने लिए जन्नत की फ़सल उगायें या जहन्नम की।

# अस्ल हार-जीत

दुनिया में कोई कामयाब नज़र आता है और कोई नाकाम। इस बिना पर लोग इसी दुनिया को हार जीत की जगह समझने लगते हैं। उनकी सोंच यह हो जाती है कि इसी दुनिया की जन्नत, जन्नत है और इसी दुनिया की दोज़ख़, दोज़ख। मगर यह धोखा है। हार जीत तो अस्ल में वह है जो अगली ज़िन्दगी में सामने आने वाली है। वह लोग जो दुनिया में अपने को कामयाब समझतें हैं जब परदा हटेगा तो वह यह देख कर हैरान रह जाऐंगे कि अस्ल हक़ीक़त तो कुछ और थी। उस वक्त मालूम होगा कि कौन गढ़े में रहा और कौन नफ़ा कमा ले गया। किसने धोखा खाया और कौन होशियार निकला। कौन मुकाबले की दौड़ में पीछे रह गया और कौन आगे बढ़ने वाला साबित हुआ। किसने अपनी योगयताओं को नतीजा देने वाले काम में लगाया और कौन था जिसने अपनी कूवतों को वक्ती तमाशों में बर्बाद कर दिया। किसने इज़्जत पाई और कौन बेइज़्जत और अपमानित होकर रह गया।

हक़ीक़त यह है कि हार उसकी है जो आख़िरत में हारा। और जीत उसकी है जो आख़िरत के दिन जीता। वह लोग जो मसलेहत परस्ती और मौक़ा परस्ती की महारत दिखा कर आज की दुनिया में इज़्जत और तरक़्क़ी हासिल कर रहे हैं। कल की दुनिया में उनकी यह महारतें बिल्कुल बेकार साबित होंगी। मरने के बाद जब वह आख़िरत की दुनिया में पहुँचेंगे तो वहाँ के हालात में इज़्जत की जगह लेने के लिए वह उसी तरह अपने आपको पाऐंगे जिस तरह एक पुराने क़िस्म का दस्तकार आदमी रिवायती माहौल में बाक़माल नज़र आता है। लेकिन अगर वह नये ढंग के आधुनिक समाज में पहुँच जाए तो वहाँ वह बिल्कुल बे क़ीमत हो जायेगा।

# सबसे बड़ा भूचाल

भूचाल खुदा की एक निशानी है। भूचाल जब आता है तो वह तमाम दुनयवी भरोसों को झूठा साबित कर देता है। भूचाल के लिए पक्के महल और कच्ची झोपड़ियों में कोई फर्क़ नहीं।

ताक़तवर और कमज़ोर दोनों उसके नज़दीक बराबर हैं। वह बेसहारा लोगों को भी उसी तरह तहस-नहस कर देता है जिस तरह उन लोगों को जो मज़बूत सहारा पकड़े हुए हैं।

भूचाल पेशगी तौर पर यह बताता है कि इस दुनिया मे अन्ततः हर एक के लिए क्या होने वाला है। भूचाल एक क़िस्म की छोटी क़ियामत है जो बड़ी क़ियामत का पता देती है। जब भयानक गड़गड़ाहट लोगों के होश गुम कर देती है। जब मकान ताश के पत्तों की तरह बिखरने लगते हैं जब ज़मीन का निचला हिस्सा ऊपर आ जाता है और जो ऊपर था वह नीचे दफन हो जाता है। उस वक्त इन्सान जान लेता है कि वह कुदरत की ताकतों के आगे बिल्कुल बेबस है। उसके लिए सिर्फ़ यह तय है कि वह अपनी आँखों से अपनी बर्बादी का तमाशा देखे और उसको रोकने के लिए कुछ न कर सके।

क़ियामत का भूचाल मौजूदा भूचाल से कई गुना ज़्यादा होगा। उस वक़्त सारे सहारे टूट जाऐंगे। हर आदमी अपनी होशियारी भूल जाएगा । महानता की सारी मिनारें इस तरह गिर चुकी होंगी। कि उनका कहीं वजूद न होगा। उस दिन वही सहारे वाला होगा जिसने मौजूदा चीज़ों को बेसहारा समझा था। उस दिन वही कामयाब होगा जिसने उस वक्त खुदा को अपनाया था जब सारे लोग खुदा को भूल कर दूसरी दूसरी छतरियां के नीचे पनाह लिए हुए था।

# जैसा बोना वैसा काटना

काटने के दिन वही आदमी खेती काटता है जिसने काटने का दिन आने से पहले खेती की हो और वही चीज़ काटता है जो उसने अपने खेत में बोई थी। यही मामला आख़िरत का भी है। आखिरत में हर व्यक्ति को वही फ़सल मिलेगी जो उसने मौत से पहले दुनिया में बोई थी। जो व्यक्ति ईर्ष्या व शत्रुता और जुल्म और शत्रुता खुदपरस्ती के तरीकों पर चलता रहा वह मानों अपनी ज़मीन में काँटेदार पौधे का बीज बो रहा है। ऐसा व्यक्ति आखिरत में काँटेदार फल पाएगा। इसके विपरीत व्यक्ति इन्साफ़ और भलाई और हक़ का तरीक़ा एख्तेयार करे वह मानों फलदार वृक्ष का बीज बो रहा है। ऐसा व्यक्ति आखिरत में खुशबूदार फूलों का वारिस बनेगा।

आदमी दुनिया में उदन्डता दिखाता है फिर भी यह ख्याल करता है कि आख़िरत में वह खुदा के नेक बन्दों के साथ उठाया जाएगा। वह दुनिया में विनाशकारी गतिविधियों में व्यस्त रहता है फिर भी यह समझता है कि वह आख़िरत के नतीजों में अपना हिस्सा पाएगा। वह दुनिया में अल्फ़ाज़ के ऊपर अपनी ज़िंन्दगी खड़ी करता है फिर भी यह यकीन रखता है कि आख़िरत में हकाएक की सूरत में उसका अन्जाम उसकी तरफ़ लौटेगा। उसके पास खुदा का पैगाम आता है मगर वह उसको नही मानता फिर भी वह समझता है कि वह खुदा के प्रिय बन्दों में शामिल किया जाएगा। खुदा इन्सान को जन्नत की तरफ बुला रहा है जो हमेशा कि आराम और खुशियों की जगह है। मगर वह चन्द दिन की झूठी लज़्जतों में खोया हुआ है। वह खुदा की पुकार की तरफ नहीं दौड़ता। वह समझता है कि मै हासिल कर रहा हूँ हालांकि वह सिर्फ खो रहा है। दुनिया में मकान बनाकर वह समझता है कि मैं अपनी ज़िन्दगी की तामीर कर रहा हूँ हालांकि वह सिर्फ रेत की दीवारें खड़ी कर रहा है जो सिर्फ इसलिए बनती है कि बनने के बाद हमेशा के लिए गिर पड़ें।

# बहुत जल्द

दौलत,इज़्ज़त,औलाद और हुकूमत वह चीज़ें हैं जिनको आदमी सबसे ज़्यादा चाहता है। वह उनको पाने के लिए अपना सब कुछ लगा देता है। मगर मौत का वाक़िया बताता है कि इस दुनिया में किसी के लिए अपनी इच्छाओं की पूर्ति सम्भव नहीं। इस दुनिया में आदमी उन चीज़ों को नहीं पा सकता जिनको वह सबसे ज़्यादा पाना चाहता है।

आदमी अगर यह सोचे कि किसी चीज़ को पाने का क्या फायदा जब कि कुछ ही रोज़ बाद उसको छोड़ कर चला जाना है तो उसके अन्दर क़िनात (संतोष) आ जाए और दुनिया की तमाम लूट खसोट खत्म हो जाए। यह एक हक़ीक़त है कि यहाँ पाने और न पाने में बहुत ज़्यादा फ़र्क नहीं। जो पाना अगले दिन खोना बनने वाला हो उस पाने की क्या क़ीमत है। आदमी अपनी सारी कोशिश खर्च करके जो चीज़ हासिल करता है वह सिर्फ़ इसलिए होती है कि अगले लम्हे वह उसे खोदे। हर ज़िन्दगी अन्ततः मौत से ठुकराने वाली है। हर वह प्रिय चीज़ को आदमी अपने पास इकट्ठा करता है। उसको छोड़ कर वह दुनिया से इस तरह चला जाता है कि फिर कभी उसकी तरफ नहीं लौटता। आदमी आज में जीता है वह कल को भूला हुआ है। आदमी दूसरे का घर उजाड़ कर अपना घर बनाता है हालांकि अगले दिन वह क़ब्र में दाखिल होने वाला है। आदमी दूसरे के ऊपर झूठे मुकदमें चला कर उसको इन्सानी अदालत में ले जाता है हालांकि फ़रिश्ते खुद उसको खुदा की अदालत में ले जाने के लिए उसके पास खड़े हुए हैं। आदमी दूसरे को नज़र अंदाज़ करके अपनी महानता के गुम्बद (मंडप) मे खुश होता है हालांकि बहुत जल्द उसका गुम्बद इस तरह ढह जाने वाला है कि उसकी एक ईंट भी देखने के लिए बाकी न रहे।

# ख़ुदा का तराज़ू

इम्तेहान की इस दुनिया में हर एक के लिए आज़ादी है। यहां यह मुमकिन है कि एक व्यक्ति अपने पड़ोसी को सताए उसके बावजूद उसको दीनदारी के स्टेज पर बैठने के लिए अहम जगह मिली हुई हो। एक व्यक्ति अपनी लीडरी के लिए सक्रिय हो फिर भी वह मुजाहिदे हक के नाम से मशहूर हो जाये। एक व्यक्ति अपने सम्बन्धियों से नाइन्साफ़ी का रवइया अपनाये इसके बावजूद अमन व इन्साफ़ के नाम पर होने वाले सम्मेलन में उसको अध्यक्षता के लिए बुलाया जाए। एक व्यक्ति की तनहाईयाँ अल्लाह की याद से खाली हो मगर अवामी मुक़ामात पर वह अल्लाह का झंडा उठाने वाला समझा जाता हो। एक व्यक्ति के अन्दर मज़लूम की मदद का कोई जज़्बा न हो फिर भी अख्बारों की सुर्खियों में उसको मज़लूमों के मददगार की हैसियत से नुमाया किया जा रहा हो। एक व्यक्ति सिर्फ बातों का कारनामा दिखा रहा हो। फिर भी क्रेडिट देने वाले उसको अमल का क्रेडिट दे रहे हों।

हर आदमी की अस्ल हक़ीक़त खुदा के इल्म में हैं मगर दुनिया में वह लोगों की हक़ीक़त को छिपाए हुए है। आख़िरत में वह हर एक की हक़ीक़त खोल देगा। वह वक्त आने वाला है जबकि खुदा की तराज़ू खड़ी हो और हर आदमी को तौल कर देखा जाए कि कौन क्या था और कौन क्या नहीं था। उस वक्त का आना निशिचित है। कोई व्यक्ति न उसको टाल सकता और न कोई व्यक्ति अपने आपको उस से बचा सकता। कामयाब सिर्फ वह है जो आज ही अपने को खुदा की तराज़ू में खड़ा कर ले। क्योंकि जो व्यक्ति कल खुदा की तराज़ू में खड़ा किया जाए उसके लिए बर्बादी के सिवा और कुछ नहीं।

# मौत के बाद

हर व्यक्ति के ऊपर वह दिन आने वाला है जबकि वह अपने आप को मौत के दरवाज़े पर खड़ा हुआ पाएगा। उसके पीछे वह दुनिया होगी जिसको वह छोड़ चुका, जिसमें अब वह वापस नहीं जा सकता। और सामने वह आलम होगा जिसमें अब उसे दाखिल होना है, जिस में दाखिला से वह अपने आपको रोक नहीं सकता।

फ़ैसले का यह दिन हर आदमी की तरफ दौड़ा चला आ रहा है। उस दिन हर आदमी अपनी असली सूरत में ज़ाहिर हो जाएगा चाहे उसने अपने ऊपर कितने ही ज़्यादा परदे डाल रखे हुए हों,चाहे उसने अपने आप को कैसे ही खूबसूरत अल्फ़ाज में छिपा रखा हो।

मौजूदा दुनिया में यह मुमकिन है कि एक खुदपरस्त आदमी अपने आपको खुदा परस्त के रूप ज़ाहिर करे। एक व्यक्ति को अपने मुकाम व मर्तबे से दिलचस्पी हो मगर लोगों के सामने वह अपने को इस अन्दाज़ में पेश करे मानो कि वह हक का सबसे बड़ा समर्थक है। एक व्यक्ति का यह हाल हो कि व्यक्तिगत नीतियां और व्यक्तिगत स्वार्थ उसकी गतिविधियों का मर्कज़ व केन्द्र हों। मगर अपने भाषण एवं लेख से वह लोगों पर ऐसा जादू करे कि लोग उसको हक का सबसे बड़ा समर्थक समझने लगें।

मगर मौत इन्सानी ज़िन्दगी की वह घटना है जो इस प्रकार की सारी चीज़ों को झूठा साबित कर देने वाली है। मौत के बाद आदमी जिस दुनिया में पहुँचता है वहाँ अचानक इस प्रकार के सारे लिबादे (आवरण) उसके ऊपर से उतर जाते है। वह अपनी असली और वास्तविक सूरत में सामने आ जाता है, अपने लिए भी और दूसरे इन्सानो के लिए भी।

# अदालत में पेशी

मौत हमारी ज़िन्दगी का खात्मा नहीं,वह हमारी अस्ल ज़िन्दगी की शुरूआत है। मौत दरअसल किसी इन्सान का वह वक्त है जब वह मालिके क़ायनात की अदालत में आख़री फ़ैसले के लिए पेश कर दिया जाता है।

मौत से पहले आदमी को बहुत से काम नज़र आते हैं। मगर मौत के बाद आदमी के सामने सिर्फ एक ही काम होगा। यह कि खुदा की सज़ा से वह किस तरह बचे। जब आदमी के पास बहुत ज़्यादा वक्त हो तो वह बहुत से काम छोड़ देता है। मगर जिस व्यक्ति को वक्त के सिर्फ चन्द लम्हे हासिल हों वह सिर्फ वही काम करता है जो बहुत ही ज़रूरी है। निर्णायक लम्हों में कोई व्यक्ति गैर मुताल्लिक या ग़ैर अहम काम में व्यस्त होने की बेवकूफी नहीं करता।

मौत के मामले की नज़ाकत उस वक्त बहुत बढ़ जाती है जब यह दिखाया जाए कि मौत का कोई वक्त निर्धारित नहीं। वह किसी भी वक्त किसी भी व्यक्ति के लिए आ सकती है। ऐसी स्थिति में एक बताने वाले के पास सब से पहली और सबसे बड़ी बात जो लोगों को बताने के लिए होनी चाहिए वह यह है कि वह लोगों को मौत के खतरे से सचेत करे। वह कल से पहले लोगों को कल के बारे में खबरदार कर दे।

इस्लाम की दावत क्या है, आख़िरत की चेतावनी। यह कब्र के उस पार के मामलात से कब्र के इस पार वालों को बाखबर करना है। इस्लाम की ओर बुलाने वाला मौत और ज़िन्दगी के दरमियान खड़ा होता है। उस को मौत से पहले मर जाना पड़ता है ताकि वह दूसरी तरफ़ की दुनिया को देखे और मुर्दो के हालात से ज़िन्दों को बाखबर कर सके।

## सबसे बड़ी घटना

हमारी दुनिया में जो सबसे बड़ी घटना घटित हो रही है वह यह है कि यहाँ बसने वाले इंसानो में से लगभग दस लाख व्यक्ति हर रोज़ मर जाते हैं। कोई नहीं जानता कि मौत के फ़रिश्ते कल के लिए जिन दस लाख आदमियों की सूची तैयार कर रहे हैं उसमें उस ज़मीन पर चलने वालों में से किस किस का नाम हो। हम में से हर व्यक्ति को मौत आनी है। मगर हम में से कोई व्यक्ति नहीं जानता कि उसकी मौत कब आएगी और जिन लोगों के दरमियान हम ज़िंदगी गुज़ार रहे हैं उनके सम्बन्ध से भी कुछ नहीं मालूम कि उनमें से कौन कल उठा लिया जाएगा और कौन कल के बाद सुनने और देखने के लिए बाकी रहेगा।

यह आने वाला वक्त हम में से हर व्यक्ति की तरफ दौड़ा चला आ रहा है। हर जिंदा इन्सान इस खतरे से ग्रसित है कि कल उसकी मौत आ जाए और उसके बाद न उसके लिए सुनने का अवसर बाकी रहे और न हमारे लिए सुनाने का। यह सूरतेहाल बता रही है कि करने का अस्ल काम क्या है। करने का काम अस्ल यह है कि हम मे से हर व्यक्ति आख़िरत की फ़िक्र करे और दूसरे इंसानों को जिंदगी के उस वास्तविक समस्या से परिचित कराये। दुनिया की आबादी अगर चार अरब है तो उसका मतलब यह है कि हमको चार अरब काम करने हैं। क्योंकि आज का हर आदमी हक़ीक़त से ग़ाफिल है, हर आदमी उसका मोहताज है कि उसको हक़ीक़त का इल्म पहुँचाया जाए। कोई बड़ा तूफान टूटने वाला हो तो छोटी बाते भूल जाती हैं। निःसन्देह मौत सबसे बड़ा तूफान है। अगर आदमी को उसका एहसास हो तो वह सबसे ज़्यादा मौत के बारे में सोचने और सबसे ज़्यादा मौत के बारे में चर्चा करे।

# आख़िरत का ऐलान

मुसलमान ख़ुदा की तरफ़ से उस ज़िम्मेदारी पर नियुक्त किए गए हैं कि वह दुनिया सारी जातियों को बता दें कि कियामत का दिन आने वाला है जबकि उनका पालनहार उनसे उन का हिसाब लेगा और फिर हर एक को उसके कर्म के अनुसार इनाम या सज़ा देगा। इस नियुक्ति ने उनके वर्तमान और भविष्य को तमाम तर उस काम के साथ बाँध दिया है। उनकी क़ीमत सिर्फ़ उस वक़्त है जब कि वह ख़ुदाई पैग़ाम को पहुचाने की उस ख़िदमत को अन्जाम दें। अगर वह उसके लिए ना उठें तो ख़ुदा के नज़दीक वह अपनी कीमत खो देंगे।

इस काम को छोड़ने के बाद कोई भी दूसरी चीज़ उनसे स्वीकार न की जाएगी। चाहे देखने में वह दीन व मिल्लत ही का कोई काम क्यों ना हो। इस ज़िम्मेदारी से गाफिल होने के बाद ख़ुदा उनको उनके दुश्मनों के हवाले कर देगा। उनके ऊपर दूसरी कौमें वर्चस्व प्राप्त करेंगी। यहां तक की दूसरी बुनियादों पर उठाई हुई उनकी इस्लामी गतिविधियों पर भी रोलर चला दिया जाएगा। ख़ुद के गढ़े हुये ख़यालात के तहत अगर्चे वह ख़ुश फ़हमियों में पड़े रहेगें। मगर परिस्थितियों की बेरहम ज़बान चीख रही होगी कि उनका ख़ुदा उनको छोड़ चुका है।

दुनिया की कौमों के सामने आख़िरत का एलान करने के लिए अगर मुसलमान नहीं उठते तो उनकी कोई कीमत ख़ुदा के नज़दीक नहीं है। न दुनिया में और न आखिरत में। यहूद की तारीख़ उस हक़ीक़त को समझने के लिए काफी है। आदमी की क़ीमत उस ज़िम्मेदारी के एतेबार से होती है जिसकी अदाएगी पर उसको लगाया गया है फिर मुसलमान जब अपनी ज़िम्मेदारी ही को अदा न करे तो उसके बाद उनकी क़ीमत उनके मालिक के नज़दीक क्या होगी।

# दावती ज़िम्मेदारी

दुनिया का सैलाब इसलिए आता है कि वह हम को क़ियामत के ज़्यादा बड़े सैलाब का नक्शा दिखाए। हक़ीक़त यह है कि क़ियामत इसी तरह का एक बहुत बड़ा सैलाब है जैसा सैलाब हर साल हमारी ज़मीन पर आता है और बस्तियों और आबादियों को तबाह व बर्बाद कर देता है। यह आने वाला सैलाब जब आएगा तो हमारे तमाम हिफाज़ती बन्द टूट जाऐंगें। वह हमको इस तरह घेर लेगा कि पहाड़ की चोटियाँ भी उसके मुक़ाबले में हमको सहारा देने से बेबस रहेंगी।

दुनिया के सैलाब में वही व्यक्ति बचता है जिसने उसके आने से पहले अपने लिए कशतियां बना ली हों,इसी तरह आख़िरत के सैलाब में सिर्फ वह व्यक्ति बचेगा जिसने अपने आपको खुदा के हवाले कर दिया हो, जो खुदा की कश्ती में सवार हो गया हो।

आज दुनिया का सबसे बड़ा काम यह है कि क़ियामत के आने वाले इस सैलाब से लोगों को सचेत किया जाए। खुदा ने अपने पैगम्बर इसी लिए भेजे ताकि वह दुनिया वालों को उस आने वाले सैलाब से होशियार करें। ताकि मौत के बाद जब खुदा लोगों को पकड़े तो किसी को यह कहने का मौक़ा न हो कि हम को एक ऐसे मामले के लिए पकड़ा जा रहा है जिस के बारे में हमें इससे पहले कुछ बताया नही गया था।

अब कोई नबी आने वाला नहीं मगर यह काम अपनी जगह बाकी है। नबूअत के खत्म होने के बाद उम्मतें मुस्लिमा इसी खास काम पर नियुक्त है। उसकी लाज़मी ज़िम्मेदारी है कि वह तमाम कौमों को उससे बाख़बर करे, इसके पहले कि खुदा का वह सैलाब फट पड़े और फिर न किसी के लिए ख़बरदार करने का मौ़का हो और न किसी के लिए ख़बरदार होने का।

## उस वक़्त क्या होगा

वह वक़्त कैसा अजीब होगा कि जब ख़ुदा की अदालत स्थापित होगी। किसी के लिए ढिठाई और इन्कार का मौक़ा न होगा। वह व्यक्ति जिसको दुनिया में लोगों ने बेक़ीमत समझ कर नज़र अंदाज कर दिया था वही ख़ुदा की नज़र में सबसे ज़्यादा क़ीमत वाला क़रार पाएगा। जिसको लोगों ने अपने दरमियान सबसे कमज़ोर समझ लिया था वही उस वक़्त ख़ुदा के हुक्म से वह व्यक्ति होगा जिसकी गवाही पर लोगों के लिए जन्नत और जहन्नम का फ़ैसला किया जाए।

उस वक़्त उन लोगों का क्या हाल होगा जो दुनिया में बहुत बोलने वाले थे मगर वहाँ अपने आपको गूंगा पाऐंगे। जो दुनिया में इज़्ज़त और ताक़त वाले समझे जाते थे मगर वहाँ अपने आपको बिल्कुल बेज़ोर देखने पर विवश होंगे। जब उन का ज़ाहिरी परदा उतर जाएगा और फिर देखने वाले देखेंगे कि दीन का लिबादा पहनने वाले दीन से किस क़दर ख़ाली थे। जब कितनी सफ़ेदियाँ काली नज़र आएंगी और कितनी रौनक़ें बे रौनक़ हो चुकी होंगी।

मौजूदा दुनिया मे लोग बनावटी गिलाफ़ों में छिपे हुए हैं। किसी के लिए खूबसूरत अल्फ़ाज़ उसकी अन्दरूनी हालत का परदा बने हुए हैं और किसी को उसकी रौनक़ें अपने जलवे छिपाए हुए हैं। मगर आख़िरत में लोगों के अल्फ़ाज़ भी उनसे छिन जाएंगे और उनकी दुनयवी रौनकें भी। उस वक़्त हर आदमी अपनी असली सूरत में सामने आ जाएगा। कैसा सख़्त होगा वह दिन। अगर आज लोगों को उसका अन्दाज़ा हो जाए। तो उनके अल्फ़ाज़ का भंडार ख़त्म हो जाये, किसी चीज़ में उनके लिए लज़्ज़त बाक़ी न रहे। दुनिया की इज़्ज़त भी उनको उतनी ही अर्थहीन मालूम हो जितनी दुनिया कि बेइज़्ज़ती।

# इस्लाम की रूह

मोमिन कौन है। मोमिन वह है जो उस घटना को अपनी आँखो से देख ले कि इसराफ़ील सूर लिए खड़े हैं और इस बात के इन्तेज़ार में हैं कि कब ख़ुदा का हुक्म हो और फूँक मार कर सारे आलम को तहस-नहस कर दें। काफ़िर और मोमिन का फ़र्क़ हक़ीक़त में इसके सिवा और कुछ नहीं कि काफ़िर दुनिया की सतह पर जीता है और मोमिन आख़िरत की सतह पर। एक ज़ाहिरी ज़िन्दगी में गुम रहता है। दूसरा आख़िरी ज़िन्दगी में अपने लिए ज़िन्दगी का राज़ पा लेता है।

इस्लाम का मतलब यह है कि ज़िन्दगी ख़ुदा और आख़िरत की याद में ढल जाए। यहाँ बन्दा अपने रब से रूहानी सतह पर मुलाक़ात करता है। मगर जब इस्लाम के मानने वालों का पतन होता है तो इस्लाम की रूह ग़ायब हो जाती है और मात्र उसके ज़ाहिरी पहलू बाकी रह जाते हैं। इस्लाम अपनी सतह से उतर कर मानने वालों की सतह पर आ जाता है।

अब नज़र न आने वाले ख़ुदा से सम्बन्ध कमज़ोर हो जाता है मगर नज़र आने वाले ख़ुदाओं का चर्चा ख़ूब शुरू हो जाता है। ख़ुदा के लिए एकान्त में रोना बाकी नहीं रहता मगर इस्लाम के नाम पर हंगामे ख़ूब तरक़्क़ी करते हैं। नमाज़ लोगों की रूह (आत्मा) को बारौनक़ नहीं बनाती मगर मस्जिद की रौनक़ें बहुत बढ़ जाती हैं। रोज़ा से परहेज़गारी का जज़्बा निकल जाता है मगर इफ़्तार व सहरी की धूम ख़ूब दिखाई देती है। ईद में बन्दगी की रूह नहीं होती मगर तमाशे की चीज़ें ख़ूब रौनक़ पकड़ती हैं। रसूल लोगों के लिए ज़िन्दगी का रहनुमा नहीं होता है। अलबत्ता रसूल के नाम पर जश्न और जल्सा, जूलूस की बहारें शबाब पर नज़र आती हैं। ख़ुलासा यह है कि ख़ुदा के दीन को अपनी दुनियादाराना ज़िन्दगी में ढाल लिया जाता है।

# भीड़ के दरमियान सन्नाटा

दीन जब जातीय परम्परा बन जाए तो एक नया अजीब व ग़रीब दृश्य सामने आता है। दीन के नाम पर तरह तरह की ज़ाहिरी धूम बहुत बढ़ जाती है मगर अस्ल दीन इतना दूर होता है कि ढूंढने से भी कहीं नहीं मिलता।

यही हाल आज मिल्लत का हो रहा है। नमाज़ियों की तादाद बढ़ रही है मगर अल्लाह के डर से झुकने वाले नज़र नहीं आते। दीन की ख़ातिर बोलने वाले बहुत है मगर दीन की ख़ातिर चुप हो जाने वाला कोई नहीं। मिल्लत को बर्बादी से बचाने के लिए हर शख़्स मुजाहिद बना हुआ है। मगर एक व्यक्ति को बर्बादी से बचाने के लिए कोई बेचैन नहीं होता। अपनी हक़ परस्ती को जानने का माहिर हर एक है मगर दूसरे की हक़ परस्ती को जानने की ज़रूरत किसी को महसूस नहीं होती। चौक पर ख़ुदा परस्ती का मुज़ाहिरा करने वालों की हर तरफ भीड़ लगी हुई है मगर तनहाईयों में ख़ुदा परस्त बनने से किसी को दिलचस्पी नहीं। ख़ुदा के दीन को सारी दुनिया में ग़ालिब बनाने का चैम्पियन हर आदमी बना हुआ है मगर ख़ुदा के दीन को अपनी ज़िन्दगी में ग़ालिब करने की फ़ुरसत किसी को नहीं। अच्छे शब्दों का भन्डार हर एक के पास मौजूद है। मगर अच्छे कर्म का ख़ज़ाना किसी के पास नहीं। जन्नत की कुन्जियों के गुच्छे हर एक के पास हैं मगर जहन्नम के ख़तरे से तड़पने की ज़रूरत कोई महसूस नहीं करता। दुनियवी रौनकों वाले इस्लाम की तरफ हर व्यक्ति दौड़ रहा है मगर उस इस्लाम से किसी को दिलचस्पी नहीं जो ज़िन्दगी में आख़िरत ज़लज़ला (भूकम्प) पैदा कर दे।

इन्सानों की भीड़ के दरमियान सन्नाटे का यह आलम शायद आसमान ने इससे पहले कभी न देखा होगा।